राष्ट्रीय सहारा 30-7-2013

गन्ने की खेती का यंत्रीकरण आज की जरूरत

कानपुर (एसएनबी)। गन्ने की परिपक्वता पर समय से उसकी कटाई एवं पेराई से चीनी रिकवरी बेहतर होती है। इसलिए जरूरी हो गया है कि गन्ने की खेती का यंत्रीकरण किया जाये। यंत्रीकरण की बेहतर संभावनाओं को तलाशने के लिए देश में चीनी उत्पादन एवं गन्ना विकास से जुड़े वैज्ञानिक एवं इंजीनियर्स मंगलवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'मेकेनाइजेशन ऑफ शुगर केन कल्टीवेशन' विषयक एकदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में जुटेंगे। यह जानकारी संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने सोमवार को प्रेसवार्ता में दी।

■ एनएसआई में 'मैकेनाइजेशन आफ शुगर केन कल्टीवेशन' पर राष्ट्रीय सेमिनार आज

सेमिनार का आयोजन संस्थान एवं शुगर टेक्नालाजी एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य गन्ना विकास एवं चीनी क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को विचार विमर्श के लिए प्लेटफार्म प्रदान करना है। प्रो. मोहन ने कहा कि संभवतः देश में इस तरह का यह पहला प्रयास है। सेमिनार का उद्घाटन मुख्य अतिथि सीएसजेएम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक कुमार द्वारा सुबह 10.30 बजे किया जायेगा। कार्यक्रम में यूपी, बिहार, हरियाणा, पंजाब, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेशों से विशेषज्ञ भाग लेंगे। सेमिनार में इंडियन इंस्टीट्यूट आफ शुगर केन रिसर्च लखनऊ, यूपी काउंसिल शुगर केन एंड रिसर्च शाहजहांपुर, शुगर रिसर्च इंस्टीट्यूट अनकापल्ली (एपी) आदि के वैज्ञानिक भाग लेंगे। प्रो. मोहन के अनुसार देश में वर्तमान में लगभग 230 लाख टन चीनी की जरूरत है। यह वर्ष 2025 तक बढ़कर 370 लाख टन होगी। इस बढ़ी मांग के लिए उन्होंने जनसंख्या के साथ ही लोगों की खाने की आदतों में हो रहे बदलाव को जिम्मेदार बताया। उनके अनुसार वर्तमान में देश में लगभग 5 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में गन्ना हो रहा है। क्षेत्रफल अधिक करने की गुंजाइश न के बराबर है, इसलिए जरूरी है कि गन्ने से चीनी की रिकवरी को बेहतर किया जाये। उन्होंने बताया कि यूपी, बिहार, हरियाणा, पंजाब आदि प्रदेशों में गन्ने से चीनी की रिकवरी 9.1 से 9.2 प्रतिशत है। वहीं, देश में औसत गन्ने से चीनी की रिकवरी 10 से 10.2 प्रतिशत है। उनके अनुसार गन्ने की प्रति हेक्टेयर खेती के लिए लगभग 300 से 330 मानव दिवस लगते हैं, जिसमें सबसे अधिक इसकी कटाई में 110 मानव दिवस लगते हैं। गन्ने की कटाई के समय ही देश के उत्तरी क्षेत्रों में गेहूं की बुआई का भी कार्य होता है। मनरेगा जैसी स्कीमों के कारण समय से मजदूर नहीं मिलते और गन्ने की कटाई परिपक्वता के काफी दिनों बाद होने से चीनी रिकवरी घट जाती है। इसलिए जरूरी है कि गन्ने की खेती का यंत्रीकरण किया जाये। उन्होंने गन्ने की खेती में यंत्रीकरण के लिए चीन एवं ब्राजील आदि देशों का उदाहरण भी पेश किया। यहां संस्थान के वैज्ञानिक डा. संतोष कुमार भी मौजूद थे।

अमर उजाला 30-7-2013

'गन्ने में कम होती जा रही है मिठास'

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में मंगलवार को 'मेकेनाइजेशन ऑफ शुगर केन कल्टीवेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन छत्रपति शाहूजी महाराज यूनिवर्सिटी कानपुर के कुलपति प्रो. अशोक कुमार करेंगे। यह जानकारी एनएसआई के डायरेक्टर प्रो. नरेंद्र मोहन ने दी है। सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए एनसआई के डायरेक्टर ने बताया कि प्रति हेक्टेयर में गन्ना की कम उपज और गन्ने में चीनी की कम मात्रा से चीनी मिलों को नुकसान हो रहा है। अब गन्ना उत्पादन और चीनी की मात्रा बढ़ाने की चुनौती है। ऐसे में शुगर केन कल्टीवेशन की संगोष्ठी मददगार साबित हो सकती है। संगोष्ठी में उत्तर प्रदेश गन्ना अनुसंधान परिषद शाहजहांपुर, गन्ना अनुसंधान केंद्र अनकापल्ली (आंध्र प्रदेश) और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ के विज्ञानी भी हिस्सा लेंगे।

निदेशक नरेंद्र मोहन

गन्ने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आज से

दैनिक जागरण 30-7-13

गन्ने से चीनी मिल रही कम

निदेशक

कानपुर, नगर प्रतिनिधि : प्रति हेक्टेयर गन्ने की उपज तथा गन्ने में शर्करा की कम मात्रा से चीनी मिले अधिक लाभ नहीं कमा पा रही है।

यह बात एनएसआई के निदेशक एनएम अग्रवाल ने कही। बताया कि बीते कई वर्षों से गन्ने की उपज में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है तथा इससे चीनी की रिकवरी में भी प्रतिकूल असर पड़ा है। कभी यह स्थिर रही तो कभी घटी है। चीनी का उत्पादन बढ़े इसके लिए इंडस्ट्री को भी बदलाव करने होंगे। इसी कड़ी में मैकेनाइजेशन ऑफ शुगर केन कल्टीवेशन पर मंगलवार को संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें शाहजहांपुर, आंध्र प्रदेश एवं लखनऊ से गन्ना अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिक भी शिरकत करेंगे।

आज 30-7-2013

आज AAJ

समाचार सार

गन्ने की खेती में मशीनीकरण होने से बढ़ेगी चीनी की रिकवरी

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में शुगर टेक्नोलोजिस्टस एसोसिएशन नई दिल्ली के सहयोग से मंगलवार को 'मेकेनाइजेशन ऑफ शुगर केन कल्टीवेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा, जिसमें ८ शोध पेपर भी पढ़े जाएंगे। गन्ने की खेती में स्वदेसी मशीनीकरण बढ़ाने से चीनी की रिकवरी भी बढ़ेगी। वर्तमान में देश में २२० लाख टन चीनी का उत्पादन है जबकि सन २०२५ तक ३७० लाख टन चीनी की आवश्यकता होगी। संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि सीएसजेएमयू के कुलपति डा. अशोक कुमार करेंगे। यह जानकारी एनएसआई कानपुर के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन ने आज पत्रकारों को दी। निदेशक ने बताया कि गन्ने की उपज और गन्ने में चीनी की कम मात्रा महत्वपूर्ण है। इसके लिए गन्ने को काटने का मशीनीकरण के साथ ही मिलों तक गन्ने पहुंचाने पर जोर दिया जाएगा। श्रमिकों की कमी को देखते हुए मशीनीकरण जरुरी हो गया है। उन्होंने बताया कि अब विदेशी आयतित मशीनों को छोड़कर स्वदेसी मशीनीकरण पर जोर होगा। साथ ही गन्ने की खेती की लागत घटाने, समय और खर्च की बचत करने के लिए चीनी उद्योग से संबंधित अनुसंधान पंजाब, हरियाणा, गन्ना अनुसंधान अनकापल्ली, आंध्र प्रदेश सहित कई प्रदेशों के कई वैज्ञानिक चर्चा करेंगे। चाइना, थाइलैण्ड, ब्राजील जैसे देश में गन्ने को काटने के लिए काफी हद तक मशीनीकरण का प्रयोग हो रहा है तो वहां चीनी की रिकवरी भी बढ़ी है।

दिनांक :- 30 जुलाई, 13

आज की जाएगी गन्ने पर चर्चा

कानपुर। चीनी के लगातार बढ़ते उत्पाद और आबादी के कारण वर्ष 2025 में देश में मांग मौजूदा 220 लाख टन से 370 लाख टन तक पहुंच जाएगी। खाद्य सुरक्षा कानून लागू होने के बाद मांग और भी बढ़ने की उम्मीद है। राष्ट्रीय शर्करा संस्था (एनएसआई) में मंगलवार को गन्ना उत्पादन बढ़ाने के लिए देश के विभिन्न राज्यों के वैज्ञानिक एकजुट हो रहे हैं।

एनएसआई के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि देश में विभिन्न कारणों से चीनी मिलें अधिक लाभ नहीं कमा पा रही हैं। प्रति हेक्टेयर गन्ने की उपज तथा गन्ने में चीनी की कम मात्रा एक महत्वपूर्ण कारण हैं।

पिछले कई वर्षों से गन्ने की उपज में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है। इससे चीनी की रिकवरी पर भी असर पड़ा है।

निदेशक ने बताया कि सामान्य खेती करने में गन्ना उत्पादन में एक हेक्टेयर खेत में 300 से 320 मानव दिवस (मेन डेज) लगते हैं। इसमें भी गन्ना की कटान में 100 से 110 मानव दिवस लगते हैं। मैकेनिकल हार्वेस्टिंग से मानव दिवसों की संख्या कम की जा सकती है।

हिन्दुस्तान

NSI TO PROMOTE MECHANISED CANE CULTIVATION

KANPUR: In a new initiative, the National Sugar Institute (NSI) has decided to promote mechanised cultivation of sugarcane for ensuring better yield and good sugar production.

A one-day seminar would be organised on this topic in association with the Sugar Technologists Association of India and other institutes at the NSI on July 30. Several equipment producing industries are expected to participate in the seminar, where they will display their machines.

NSI director Narendra Mohan said sugarcane yield has become stagnant in the state and needed a boost for better sugar recovery. He said the cultivation of sugarcane has become an expensive business, as 330 days are required for growing sugarcane on a one-hectare plot of land and over 110 persons needed to harvest it.

HTC

Hindustan Times 30-7-13